

अग्निहोत्र यज्ञ कैसे करें?

वैष्णव यज्ञ कैसे करें?

पंडित श्री काशीनाथ मिश्र जी द्वारा संपूर्ण यज्ञ विधि एवं मंत्रोच्चारण

घर पर प्रतिदिन करने योग्य सरल विधि • लगभग 10-15 मिनट



पंडित श्री काशीनाथ मिश्र जी — श्री महाविष्णु यज्ञ प्रशिक्षण, गढ़ाणेवाडी (महाराष्ट्र), 7 अक्टूबर 2026

kalkiabatara.org • bhavishyamalika.com

सामग्री:

1. पंचतीर्थ जल (गंगा, यमुना, वैतरणी, शिप्रा, सरस्वती) या गंगाजल
2. श्वेत वस्त्र
3. 10-12 पुष्प (पीले, लाल या सफेद)
4. जल के लिए छोटा पात्र या कमण्डलु
5. छोटा यज्ञ-कुण्ड
6. सूखा उपला
7. आम और बेल की छोटी लकड़ियाँ (पीपल/अश्वत्थ और शमी भी चलती हैं; पलाश केवल ग्रह-दोष के लिए)
8. कपूर
9. कुश (रात भर भिगोई हुई)
10. चन्दन, कुमकुम या सिन्दूर, तुलसी
11. धूप
12. शुद्ध गाय का घी
13. भोग के लिए गुड़, केला या अन्य फल, पुष्प, मिश्री
14. दो तुलसी-पत्र
15. भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र (यदि हो)

सारी सामग्री एकत्र करके उस पर गंगाजल या पंचतीर्थ जल छिड़कें; किसी भी वस्तु को पैर न लगने दें।

विधि — चरण 0 से 18

0. प्रतिदिन, स्थान, दिशा और समय — यह यज्ञ प्रतिदिन करना है — अभी दिन में एक बार (पंडित जी: आगे चलकर दो बार); पूरी विधि में लगभग 10-15 मिनट लगते हैं। यज्ञ-कुण्ड पूर्व-पश्चिम दिशा में रखें। आप पश्चिम की ओर बैठकर पूर्व की ओर मुख करें; भगवान विष्णु की मूर्ति या चित्र पूर्व में रखें। पूजा-घर में स्थान न हो तो आँगन या कोई भी स्वच्छ स्थान चलेगा — पहले उस स्थान पर गंगाजल छिड़कें, हाथ से लेपन करें और फिर जल छिड़कें। समय: ब्रह्म-मुहूर्त अथवा दोपहर से पहले (ठीक 12 बजे उत्तम), या सूर्यास्त से आधा घंटा पहले। स्त्री और पुरुष — सब कर सकते हैं। अशौच में न करें: जन्म-सूतक में 6 दिन, मृत्यु-अशौच में 11 दिन।

1. स्नान और शरीर-शुद्धि — स्नान के जल में पंचतीर्थ जल की एक बूँद डालें और स्नान करते हुए 'श्री विष्णु' तीन बार कहें। स्नान के बाद पूरे शरीर पर जल छिड़कते हुए (संस्कृत में ही) बोलें:

हे भगवन् विष्णो! वैष्णवस्य परमार्थे मम शरीरं, मम मनः शुद्धं भवतु।

हे भगवन् विष्णो! संसारस्य कल्याणस्य अर्थे वैष्णव यज्ञ कार्य सम्पन्न अर्थे कृपां कल्याणं च कुर्वन्तु।

1-क. रोगी अथवा अशक्त के लिए — केवल अपवाद — स्नान न कर सकें तो हाथ-पैर धोकर पंचतीर्थ जल दोनों कानों, दोनों आँखों, मुख, नाक, नाभि, दोनों बगलों और गुप्तांग पर 'श्री विष्णु' कहते हुए छिड़कें। स्वस्थ होते ही स्नान करके ही यज्ञ करें।

2. आँगन में पुष्प-अर्पण — आँगन में भूमि पर थोड़ा गंगाजल सींचें और वहीं एक पीला, लाल या सफेद पुष्प रखते हुए बोलें:

भगवन् विष्णो, सूर्यदेव, धरतीमातः, चतुर्दिक्षु सर्वदेवी-देवताभ्यः पुष्पं समर्पयामि।

3. धरती माता और सब देवताओं को जल — धरती माता पर तीन बार जल डालें। फिर सब देवी-देवताओं के नाम से तीन बार थोड़ा-थोड़ा जल डालें — एक साथ नहीं। (जल के लिए छोटा पात्र या कमण्डलु रखें।)

ॐ नमो भूम्यै (पृथिव्यै) मातायै नमः।

3-क. पित्र तर्पण — केवल यदि माता या पिता दिवंगत हों — दक्षिण की ओर मुख करें। जल बाएँ हाथ में लेकर दाहिने हाथ पर डालें और दाहिने हाथ के अंगूठे और तर्जनी के बीच से नीचे बहने दें (या दोनों हाथ जोड़कर); तीन बार दें। चाहें तो दिवंगत पिता या माता का नाम लें।

ॐ पित्रदेवाय नमः । (अपने दिवंगत पिता/माता का नाम लेकर भी)

4. सूर्य-अर्घ्य — सात बार — सूर्यदेव को सात बार जल दें — भूमि पर बैठकर या खड़े होकर, कुर्सी पर नहीं। पंडित जी ने यज्ञ-प्रशिक्षण में केवल पहला (एहि सूर्य...) मन्त्र बताया — यज्ञ के लिए केवल यही आवश्यक है।

सामान्य सूर्य-नमस्कार की पूर्ण विधि (संघ की सूर्य-अर्घ्य पद्धति से — यज्ञ-प्रशिक्षण का भाग नहीं, वैकल्पिक):

प्रातःकाल — (1) सातों अर्घ्य में से प्रत्येक पर पहला मन्त्र; (2) सूर्य-मण्डल में स्थित भगवान नारायण का ध्यान (दूसरा मन्त्र); (3) बारह नामों से प्रणाम (तीसरा मन्त्र); (4) अर्घ्य का जल मस्तक और आँखों पर लगाकर थोड़ा चरणामृत चौथे मन्त्र से पिँ। सायंकाल (सूर्यास्त से पहले) — जपाकुसुम मन्त्र।

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते । अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर ॥

ॐ ध्येयः सदा सवितृमण्डलमध्यवर्ती नारायणः सरसिजासनसन्निविष्टः । केयूरवान्
मकरकुण्डलवान् किरीटी हारी हिरण्मयवपुर्धृतशङ्खचक्रः ॥

ॐ सूर्याय नमः । ॐ भास्कराय नमः । ॐ रवये नमः । ॐ मित्राय नमः । ॐ भानवे नमः । ॐ
खगाय नमः । ॐ पूष्णे नमः । ॐ मरीचये नमः । ॐ आदित्याय नमः । ॐ सावित्रे नमः । ॐ
अर्काय नमः । ॐ हिरण्यगर्भाय नमो नमः ।

अकालमृत्युहरणं सर्वव्याधिविनाशनम् । सूर्यपादोदकं तीर्थं जठरे धारयाम्यहम् ॥

जपाकुसुमसंकाशं काश्यपेयं महाद्युतिम् । तमोऽरिं सर्वपापघ्नं प्रणतोऽस्मि दिवाकरम् ॥

हे दिनकर! हे सूर्य! वैष्णव यज्ञे तेज-प्रकाश अर्थे, ज्योति-प्रकाश च पवित्रता-प्रकाश उद्देश्य मम
कल्याणं कुर्वन्तु।

5. श्वेत वस्त्र — सूर्य-अर्घ्य के बाद श्वेत वस्त्र पहनें — धोती-कुर्ता, चूड़ीदार-कुर्ता या साड़ी।

6. यज्ञ-कुण्ड की तैयारी और आह्वान — यज्ञ-कुण्ड के बीच में सूखे उपले का टुकड़ा रखें। कुण्ड पर चन्दन और कुमकुम या सिन्दूर लगाएँ; 'भगवान विष्णु, विष्णु, विष्णु' कहते हुए कुण्ड पर तीन बार जल छिड़कें। एक सफेद या पीला पुष्प और एक तुलसी-पत्र कुण्ड में रखकर भगवान का आह्वान करें। यज्ञ में कभी 'मेरा कल्याण करो' न कहें — सदा संसार के कल्याण की ही प्रार्थना करें।

हे भगवन् विष्णो! अत्र यज्ञकुण्डे वैष्णवस्य यज्ञः उद्देश्येन आगमन-पूर्वं संसारस्य कल्याणं कुर्वन्तु।

7. कपूर, लकड़ी और कुश — उपले पर थोड़ा कपूर और उसके ऊपर आम और बेल की पतली छोटी लकड़ियाँ रखें। कुश को यज्ञ-कुण्ड से स्पर्श कराकर एक ओर रख दें। रात भर भिगोई हुई कुश की अंगूठी बनाकर अनामिका (रिंग-फिंगर) में पहनें — तर्जनी ('विष की अंगुली') में कभी नहीं।

8. धूप और अग्निदेव का आह्वान — दीप नहीं, केवल धूप जलाएँ। धूप जलाते समय अग्निदेव का आह्वान करें और अग्निदेव, सूर्यदेव तथा गणपति को वन्दन करें:

हे अग्निदेव! सकल सृष्टि-कल्याणस्य अर्थे वैष्णवस्य यज्ञः आगमन-पूर्वकं कृपां तेजः यज्ञं च सफलं
कुर्वन्तु।

9. पुष्प-स्थापन और पित्रदेव का आह्वान — सामने (कुण्ड और आपके बीच): सूर्यदेव, अग्निदेव, गणपति और भगवान विष्णु के लिए पुष्प। दक्षिण में: रुद्रदेव, ब्रह्मदेव और इन्द्रदेव के नाम से चन्दन-कुमकुम और तीन पुष्प। दाहिनी ओर, अर्थात् दक्षिण (पूर्वाभिमुख बैठने पर दाहिना हाथ दक्षिण में पड़ता है): अग्निदेव, भगवान विष्णु, महालक्ष्मी और ब्रह्मा-विष्णु-महेश्वर का स्मरण करते हुए पुष्प — पारम्परिक हवन-विधि में भी ब्रह्मा का आसन कुण्ड के दक्षिण में ही होता है; जल-पात्र (प्रणीता) उत्तर में रखा जाता है। दक्षिण में ही चन्दन और सिन्दूर लगाकर एक पुष्प पित्रदेव के लिए रखें और आह्वान करें। अष्ट-दुर्गा, सप्तशती माता और ग्राम-देवताओं के लिए कुण्ड में थोड़ी धूप दें।

हे पित्रदेवो! दक्षिणदिश्यां आगच्छ, अत्र तिष्ठ, इह तिष्ठ, सर्वे कल्याणं कुर्वन्तु।

10. यज्ञ से ठीक पहले जल-सिंचन — आँखों, कानों और पूरे शरीर पर जल छिड़कें और गंगाजल से शरीर के चारों ओर तीन बार सिंचन करें:

भगवन् विष्णो! मम शरीरे शुद्धिः भवतु। बाह्यशक्ति-प्रभावात् मम शरीरस्य रक्षां कुर्वन्तु।

11. अग्नि-प्रज्वलन और दशावतार का आह्वान — अग्निदेव का स्मरण करके कपूर जलाएँ। छोटी लकड़ियाँ जलने लगेँ, तब दसों अवतारों का आह्वान करें:

श्री मत्स्यः, श्री कच्छपः, श्री वराहः, श्री नृसिंहः, श्री वामनः, श्री परशुरामः, श्री रामः, श्री बलरामः, श्री बुद्धः, श्री कल्किः — वैष्णवस्य यज्ञस्य आगमन-पूर्वकं चतुर्दश-ब्रह्माण्डस्य कल्याणं कुर्वन्तु।

12. पाँच-पाँच आहुति — प्रत्येक आहुति = एक छोटी लकड़ी, जिसका एक सिरा शुद्ध गाय के घी में छुआया हो (पूरी न डुबोएँ; भेंस का घी नहीं)। पहले पाँच आहुति भगवान विष्णु को, फिर पाँच माता महालक्ष्मी को:

ॐ भगवते विष्णवे नमः, इदं भगवते विष्णवे । अथवा: ॐ नमो नारायणाय नमः, इदं नारायणाय ।

ॐ माता महालक्ष्म्यै नमः, इदं महालक्ष्म्यै । [उच्चारण: ॐ माता महालक्ष्मी नमः, इदं महालक्ष्मी]

13. दशावतार-स्तोत्र — जयदेव-कृत दशावतार-स्तोत्र ('प्रलयपयोधिजले धृतवानसि वेदम्...') के दसों अवतार-श्लोक उच्च स्वर में पढ़ें; स्तोत्र का पाठ त्रिसंध्या पुस्तिका में छपा है। पंडित जी का निर्देश: प्रत्येक श्लोक के बाद पाँच आहुति — कुल 50।

14. पूर्णाहुति — 'शुक्लाम्बरधरं...' पढ़कर पाँच आहुति दें; फिर 'त्वमेव माता...' पढ़ें। फिर पूर्णाहुति-प्रार्थना बोलते हुए भगवान विष्णु और महालक्ष्मी को पूर्णाहुति दें और थोड़ा गुड़ कुण्ड में डालें:

शुक्लाम्बरधरं विष्णुं शशिवर्णं चतुर्भुजम् । प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

त्वमेव माता च पिता त्वमेव त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव । त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव त्वमेव सर्वं मम देवदेव ॥

हे भगवान विष्णु! पूर्णाहुतिं ददामि — सर्व सृष्टि, संसार कल्याण, सचराचर कल्याण अर्थे; मम दोषो न विद्यते । हे भगवान विष्णु! सत्ययुग आगमन अर्थे, धर्म संस्थापना अर्थे यज्ञे पूर्णाहुतिं प्रददामि ।

15. भोग / नैवेद्य — केला या अन्य फल, गुड़, पुष्प, मिश्री — जो उपलब्ध हो। भोग पर एक तुलसी-पत्र रखें और एक कुण्ड में डालें। थोड़ा-सा भोग कुण्ड में डालें — तीन बार नारायण के नाम से, फिर तीन बार महालक्ष्मी के नाम से:

ॐ नमो नारायणाय नमः (×3) । ॐ नमो महालक्ष्म्यै नमः, नैवेद्यं समर्पयामि (×3) ।

16. क्षमा-प्रार्थना — भोग अर्पित करते समय यह प्रार्थना करें:

प्रभु मैं मंत्रहीन हूँ, ज्ञानहीन हूँ, बुद्धिहीन हूँ, मेरा कोई ज्ञान नहीं है। तो इसीलिए प्रभु जो भी मुझसे गलती हुई है या जो मेरी योग्यता में नहीं है — आप ब्रह्माण्ड के ठाकुर हैं, आप विश्वेश्वर हैं, विश्व-स्रष्टा हैं, विश्व-कर्ता, अनादि-अनन्त, आप महाविष्णु, आप सनातन हैं। मुझ पर कृपा करो, कल्याण करो, और प्रभु आपकी शरण में मैं जाता हूँ, आप मेरा कल्याण करो।

17. अन्य देवताओं को भोग — ब्रह्मदेव, रुद्रदेव, इन्द्रदेव और सब देवी-देवताओं के लिए थोड़ा-थोड़ा भोग कुण्ड में डालें। कुण्ड के चारों ओर रखी वस्तुएँ वहीं रहने दें।

18. आरती और प्रणाम — थोड़े-से कपूर से भगवान विष्णु की आरती करें, ये श्लोक बोलते हुए। फिर सात बार मस्तक भूमि पर टेककर प्रणाम करें और संसार के कल्याण की प्रार्थना करें। पूरी विधि में लगभग 10-13 मिनट लगते हैं।

वन्दे वृन्दावन-गुरुं कृष्णं कमल-लोचनम् । पीताम्बरं घनश्यामं वनमाला-विराजितम् ॥ त्रिभङ्ग-भङ्गिमा-रूपं श्रीराधिका-प्राणवल्लभम् । गोपी-मण्डल-मध्यस्थं शोभितं नन्दनन्दनम् ॥

वसुदेवसुतं देवं कंसचाणूरमर्दनम् । देवकीपरमानन्दं कृष्णं वन्दे जगद्गुरुम् ॥

यदि किसी दिन यज्ञ न हो सके

अशौच, यात्रा, वर्षा, सामग्री का अभाव या मन की अस्थिरता के कारण किसी दिन यज्ञ सम्भव न हो, तो उसी समय बैठकर 108 बार यह मन्त्र जपें:

भगवान महाविष्णु यज्ञपुरुषाय नमः । (१०८ बार)

फिर प्रार्थना करें: "प्रभु, आज यज्ञ नहीं कर पाया; उसका फल मुझे प्राप्त हो।" यह केवल उस दिन का विकल्प है, नियमित साधना का नहीं। संस्कृत न आए तो "श्री विष्णु, श्री विष्णु" कहते हुए यज्ञ करते रहें — प्रतिदिन पढ़ने से धीरे-धीरे आ जाएगा। शनि-दशा चल रही हो तो (वैकल्पिक) शनिदेव को सात आहुति दें और एक पीला पुष्प चढ़ाएँ।

अग्नि-सुरक्षा: यज्ञ-कुण्ड को स्थिर, अज्वलनशील सतह पर रखें; पर्दे, कागज़, गैस और बच्चों को दूर रखें; हवा का आवागमन बनाए रखें; लकड़ी के लिए धातु का चिमटा और पास में पानी या रेत रखें; ढीले वस्त्र आग से दूर रखें; जलती अग्नि को कभी अकेला न छोड़ें।

पंडित जी को स्वयं सुनें — YouTube



हिन्दी वीडियो

▶ भविष्य मालिका का अमृत ज्ञान चैनल पर खोजें — हिन्दी (सम्पूर्ण विधि, 18 चरण):

“अग्निहोत्र यज्ञ कैसे करें? / पंडित जी द्वारा चरणबद्ध विधि”

▶ Kalki Avatar International चैनल पर अंग्रेज़ी उपशीर्षक सहित भी उपलब्ध — खोजें: “How to Perform Agnihotra Yagya | Step by Step with Pandit Shri Kashinath Mishra Ji”

▶ पूरी श्रृंखला (चरण-दर-चरण भाग सहित) — प्लेलिस्ट: <https://www.youtube.com/playlist?list=PLWUCRbHYt17M>

kalkiabatara.org · bhavishyamalika.com

